>

Title: Need to accord the status of AIIMS to Muzaffarpur Medical College and hospital in Bihar.

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): महोदया, प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना के अंतर्गत देश में 14 अस्पतालों को उत्कृमित कर एम्स का दर्जा दिया गया। बिहार की आबादी 10 करोड़ है, लेकिन स्वास्थ्य के मामले में सबसे पिछड़ा राज्य है। वहां का गरीब यहां मारा-मारा फिरता है। यहां जितने माननीय सदस्य हैं, सबके यहां दर्जनों बीमार आदमी एम्स में इलाज कराने के लिए पड़े रहते हैं, तो क्यों नहीं वहां एक एम्स और बना दिया जाए। मुजफ्फर पुर श्री कृष्ण मेडिकल कालेज अस्पताल है। 175 एकड़ जमीन है, 600 बेड हैं और वहां 2500 गरीब बीमार आउटडोर में रोज आते हैं, इसलिए वहां के सभी पार्टियों के माननीय सदस्यों ने, विधायकों ने मुख्यमंत्री से मांग की है। मुख्यमंत्री ने कृपा की है और प्रधानमंत्री जी को पत्र लिखा है। राज्य सरकार का प्रस्ताव आ गया है। इससे वहां 4 करोड़ की आबादी लाभान्वित होगी। पड़ोस में नेपाल देश की डेढ़ करोड़ आबादी भी इससे लाभान्वित होगी। इसलिए श्री कृष्ण मेडिकल कालेज, मुजफ्फरपुर अस्पताल को एम्स का दर्जा दिया जाए, जैसा देश के अन्य राज्यों में 14 अस्पतालों को उत्कृमित कर एम्स का दर्जा दिया गया है

इसी तरह से बिहार में भी मुजफ्फरपुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल को एम्स का दर्जा दिया जाए, यह हमारी मांग है। सभी माननीय सदस्यों ने, सभी पार्टी के लोगों ने लिखा है और वहां आंदोलन चल रहा है। डा. राम मनोहर लोहिया जन्म शताब्दी के अवसर पर साल भर तक यह लड़ाई चलेगी जब तक मांगें पूरी नहीं होगी, तब तक लड़ाई चलेगी। वहां मेडिकल कॉलेज के सामने 13 अक्टूबर को धरना दिया गया था। अब पदयात्रा होने जा रही है, इसलिए सरकार से और प्रधान मंत्री जी से तथा स्वास्थ्य मंत्री जी से मैं मांग करता हूं कि जन भावना को देखते हुए, बिहार के पिछड़ेपन को देखते हुए, वहां के गरीब लोगों के इलाज के लिए कि वे वहीं पर रह जाएं क्योंकि आने-जाने में गरीब मर जाता है, यहां दिल्ली तक पहुंचते-पहुंचते खर्च से अलग तबाह हो जाता है। हर एम.पी. के यहां गरीब डेरा डाले हुए हैं क्योंकि यहां के एम्स में आधे से अधिक लोग बिहार के लोग हैं। वे दर-दर की ठोकर खा रहे हैं। यहां अस्पताल में उनको कहा जाता है कि अब आप तीन महीने बाद आइए, छ: महीने बाद आइए। वे हम लोगों के यहां डेरा डाले रहते हैं और जल्दी इलाज कराने के लिए, लिखा-पढ़ी कराने के लिए गरीब आदमी परेशान होते रहते हैं।

संयोग से हिन्दुस्तान में गरीब को ज्यादा बीमारी परेशान करती है और बड़े लोग तो विभिन्न नर्सिंग होम में अपना इलाज करा लेते हैं; लेकिन गरीब के लिए सरकारी अस्पताल ही सहारा है, दूसरा उसका कोई सहारा नहीं है। नहीं तो भगवान भरोसे आदमी जिएगा, नहीं तो गरीब को ट्यूमर, केंसर, किडनी, हार्ट इत्यादि बीमारियां होती रहती हैं। इसलिए प्रधान मंत्री जी से निवेदन है कि मुजफ्फरपुर मेडिकल कॉलेज को एम्स का तुंत दर्जा दिया जाए। 14 अस्पताल विभिन्न विकसित राज्यों में उत्कृमित हुए हैं और बिहार जैसे पिछड़े राज्य की तरफ ध्यान नहीं दिया जा रहा है। मुख्य मंत्री ने लिखने में विलम्ब किया लेकिन फिर भी उन्होंने लिखा है और सभी माननीय सदस्यों ने उस पर हस्ताक्षर किये हैं और इसकी मांग की है। यहां भी सदस्यों ने माननीय प्रधान मंत्री जी से मांग की है। इसलिए हमारी विनती है कि मुजफ्फरपुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल को एम्स का दर्जा दिया जाए। वहां 10 करोड़ आबादी है। छोटे-छोटे राज्यों में जहां 85 लाख है, उनको एम्स दिया, जहां 2 करोड़ है, उनको एम्स दिया लेकिन वहां 10 करोड़ है; जब नया एम्स शुरु किया गया, तो उसका भी कुछ अतापता नहीं है कि कब होगा। 5 वर्ष लगेंगे या 10 वर्ष लगेंगे लेकिन पौने दो सौ एकड़ जमीन, 600 बैड, 2500 आउटडोर में वहां बीमार आते रहते हैं, वहां के अस्पताल की हालत ठीक नहीं है। 101 डॉक्टर की पोस्ट्स हैं लेकिन अभी 49 डॉक्टर्स हैं। नर्स भी एक तिहाई हैं। बीमार आदमियों का इलाज फर्श पर किया जाता है, फर्श पर ग्लूकोस चढ़ाया जाता है, गरीबों की बहुत पीढ़ा है। एक तो उनको गरीबी की पीड़ा है और दूसरे बीमारी की पीड़ा है। मरीज की बहुत ज्यादा पीढ़ा है, इलाज नहीं होता है तो और पीढ़ा बढ़ती जा रही है। आपने बड़ी कृपा करी है, सरकार उस पर ध्यान दे, उस पर रेस्पांड करे, जवाब दे और घोषणा करे कि तुंत मुजफ्फरपुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल को उत्कृमित करके एम्स का दर्जा दिया जाए। मैडम, ये सब लोग भी इस पर एशोसिएट करेंगे।

कई माननीय सदस्य: हम भी इस विषय के साथ स्वयं को एशोसिएट करते हैं।.

अध्यक्ष महोदया : अच्छा ठीक है। आप लोग अपनी स्लिप भेज दीजिए।